National Journal of Multidisciplinary ResearchAnd Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 14-11-2023, Accepted: 29-11-2023, Published: 15-12-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 191-193

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी समस्याएँ

अनुपम कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविधालय, भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश
उपन्यासकार राजेंद्र यादव नारी के समान अधिकारों की मांग करते हुए मध्ययुगीन संस्कारों से परिपालित पुरुषाधिन्य समाज में नारी की स्थिति को सुधारने के पक्ष में कई प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचार व्यक्त करते हैं वे अपनी कृतियों में नारी की स्थिति पर पाठकों की सहानुभूति को खींचने आर्थिक एवं सामाजिक पिछड़ेपन की वजह से नारी की असहाय स्थिति का यथार्थ वर्णन करते हैं। इतना ही नहीं नारी उनके समकालीन कथाकारो की तुलना में राजेन्द्र यादव की नारी –नियति अधिक परिष्कृत एवं मानवीय मूल्य के आधार पर समाज के गहरे सरोकारों से जुड़ी हुई प्रतीत होती है। क्योंकि कथाकार के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनके मानवीय मूल्यों को संपोषित करने की पक्ष धरता है इसी कारण उनकी कृतियों में नारी जीवन के कई सबल एवं सकारात्मक पक्षों का अंकन हुआ है।
कथाकार राजेंद्र यादव ने कथा के सहारे नारी विषयक स्थितियों के संबंध में जो विचार व्यक्त किये हैं। उनका सीधा संबंध समाज से हैं। नारी शिक्षा, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह,पति व्रत धर्म, मर्यादा पालन तथा समान अधिकारों की मांग आदि स्थितियों का राजेंद्र जी ने अपने साहित्य में विस्तृत वर्णन किया हैं। उनके उपन्यासों में नारी की विभिन्न स्थितियाँ इस रूप में मुखरित हुई है,चाहे वे स्थितियाँ पारिवारिक, सामाजिक, राजनीति, नैतिक या अन्य कोई हों इन्होंने मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कथानक का चयन कर नारी संबंधी स्थितियों को अपने पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। राजेंद्र यादव की विशेषता रही है कि वे जिन स्थितियों का निरूपण करते हैं,।गहराई से करते हैं,उसके सभी पक्षों पर विविध प्रकार से प्रकाश डालते हैं तथा साथ ही उनका समाधान का भी प्रयास किए हैं। उन्होंने समाज में नारी की बिगड़ती दशा को देखकर उसे अपने उपन्यासों का विषय बनाया और उनकी स्थितियों का विस्तृत धरातल पर चित्रित किया है।

मूलशब्दः पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, वैवाहिक मन की छटपटाहट।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री का प्रवेश एवं उसका योगदान अपनी एक अलग पहचान बनाता है। हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में नारी जीवन को पर्याप्त रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की जाती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में अनेक उपन्यासकारों ने नारी जीवन की संवेदनाओं को उजागर करने का प्रयत्न किया है।
परन्तु, पश्चिमी जीवन का अनुकरण, आर्थिक दबाव, गहरी जीवन की चमक दृ दमक का अनुकरण टूटते परिवार की यातना से नारी के जीवन में कई प्रकार की समस्याऐं उत्पन्न हुई है, जिसके परिणाम स्वरूप स्त्री–पुरुष के संबंधों में विच्छेद हो रहा है। इन विगड़ते संबंधों के माध्यम से नारी पात्रों की संवेदनाओं को व्यक्त करने का प्रयास किया है।
आधुनिक समाज में नारी की भूमिका, विचारों का उहापोह, पाश्चात्य अनुकरण से धुंध महानगरीय जीवन सन्त्रास, यान्त्रिकता से लिप्त व्यक्ति संवेदनशुन्य भावनाहीन, आन्तरिक संघर्ष से घुटता व्यक्ति आदि विशेषताओं के घेरे में आज का कथा साहित्य परिवर्तित हो रहा है। नई कहानी क प्रवर्तक राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में इन सभी विशेषताओं को बड़ी सूक्ष्मता से वास्तविक यर्थाथ जीवन को मार्मिकता से रेखांकित किया है।
आधुनिक नारी का चित्रण हमें महादेवी वर्मा की प्रसिद्ध कविता की मधुर पंक्तियों में दिखालाई पड़ती हैः–

"मैं नीर भरी दुःख की बदली
विस्तृत नभ का कोना–कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी, मिट आज चली।"

यह पंक्तियाँ भारतीय नारी की व्यथा को चित्रित करती है। जो शिक्षा, जागृति, स्वतंत्रता दृ आन्दोलन और बदलती स्थितियों में अपने आपको पहचानने की कोशिश कर रही है, अपने होने और सामाजिक नियति के प्रति जागरूक हो रही थी। यानि वह एक बेजान और बेजबान 'चीज' से बदलकर 'व्यक्तित्व' बन रही थी। संस्कारों, रूढ़ियों और सामन्ती विधि–निषेधों में बंधी नारी तब यथा–स्थिति के खिलाफ विद्रोह नहीं कर सकती थी। न 'बाहर' की दुनिया के सीधे सम्पर्क में आ सकती थी, न वहाँ से शक्ति और प्रेरणा ले सकती थी। घर की लक्ष्मण रेखा लांघ जाने पर उसके लिए सिर्फ हत्या, आत्महत्या और वेश्यालय ही थे।
जब की वास्तविक रूप से देखा जाए तो नारी समाज का अभिन्न अंग है। समाज के लिए पुरुष जितना आवश्यक है, उतनी ही स्त्री। स्त्री–पुरुष दोनों का अस्तित्व समान है। समाज का यह विशाल रथ स्त्री एवं पुरुष के सहयोग से चलता है। रथ का एक पहिया स्त्री है तो दूसरा पुरुष। दोनों का महत्व समान है। इनमें से न कोई छोटा और न कोई बड़ा होना चाहिए। इस विषय में डॉ० शीला रजवार का मानना है किः– "एक स्वतंत्र बुद्धिमान और पूर्ण पुरुष की आवश्यकता भी यही है कि उसे स्वतंत्र, बुद्धिमानी और पूर्ण महिला का संसर्ग प्राप्त हो। किसी देवी, मानवी, स्वाभिमानी या दासी, बुद्धिजीवी या कामिनी, पर्दों की रानी या निर्लज्जा का नहीं। सभ्यता के विकास रूपी वाहन की प्रक्रिया में नारी या पुरुष वास्तव में दो पहिए बनकर चलने चाहिए।"[1]
परन्तु, पुरुष ने स्त्री को अपने से अधिक श्रेष्ट न होने के लिए उसके शरीर को केन्द्र में रखकर उसके चारों ओर से रीति दृ रिवाज बनाकर उसे कैद के लिए, जो आगे चलकर रूढ़ि परम्परा बन गई। इससे स्त्री के व्यक्तित्व विकास एवं समाज की प्रगति में बाधा बन गई। स्त्री को केवल उसके शरीर तक ही सीमित रखना गलत है। वह समाज में प्रतिष्ठा के पात्र है। उसके मुक्ति की याचना करते हुए सुमित्रानंदन पंत ने कहा हैः–

"मुक्त करो नारी को मानव। युग बंदिनी नारी को,
युग– युग की निर्मम कारा से जननि सखि प्यारी को।"[2]

भारतीय समाज में पुरुष प्रधान संस्कृति है, जिसमें नारी अनेक समस्याओं से घिर गई है। हिन्दी के लगभग सभी उपन्यासकारों

ने अपनी लेखनी के माध्यम से नारी समस्याओं एवं उसके उपायों को अंकित करने का सफल प्रयास किया है। ऐसे उपन्यासकारों में से राजेन्द्र यादव का उपन्यास नारी समस्याओं से भरा–परा है। यादव जी के उपन्यास 'सारा आकाश, उजड़े हुए लोग, 'कुलटा', 'मन्त्रविद्ध', 'शह और मात', 'अनदेखे अनजान पुल', 'एक इंच मुस्कान, एक था शैलेन्द्र इन सभी उपन्यासों में स्त्रियों की समस्याओं को उजागर किया और दृष्टिक्षेप करने का प्रयास किया है तथा मोहन राकेश का उपन्यास – 'अँधेरे बंद कमरे', 'न आने वाला कल; 'अंतराल' इन उपन्यासों में भी स्त्री समस्याओं को दिखाने का प्रत्यन किया है। जैसे वैवाहिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, आदि कारणों से उत्पन्न होनी वाली समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है जो निम्न प्रकार हैः–
इन सभी समस्याओं को हम विभिन्न रुप में देख सकते हैं।

1. वैवाहिक समस्याएँः विवाह हिन्दू धर्म प्रथा के अनुसार सोलह संस्कारों में एक पवित्र संस्कार है। विवाह के माध्यम से ही समाज स्त्री–पुरुष दोनों को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की अनुमति देता है। विवाह से दो परिचित–अपरिचित स्त्री पुरुष पवित्र बन्धन में बंध जाते हैं। परन्तु, आज के आधुनिक युग में युवक–युवतियों के लिए विवाह एक पवित्र बन्धन के रूप में नहीं, समस्या के रूप में सामने आने लगा है।

विवाह प्रत्येक समाज का अभिन्न अंग है। चाहे वह प्राचीन समाज हो या आधुनिक। यह कोई नयी पद्धति नहीं है, बल्कि आदि काल से चली आ रही परम्परा है। विवाह ही एक ऐसा बन्धन है जो व्यक्ति एवं समाज में स्थिरता पैदा करता है, और यही समाज की प्रारम्भिक ईकाई है। इसी से परिवार का जन्म होता है। प्रेमचंद्र के अनुसारः– "यह (विवाह) कच्चे धागे का कंगन पवित्र धर्म की हथकड़ी है, जो कभी हाथ से न निकलेगी और मंडप उस प्रेम और कृपा की छाया का स्मारक है, जो जीवन पर्यंत सिर से न उठेगी।"[3] किन्तु, आज के युग में विवाह के साथ चली आ रही रीति–रिवाजों से अनेक समस्याएँ सामने आने लगी है।

राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी जीवन में विवाह तथा वैवाहिक जीवन की समस्याओं को प्रधानता दी है। जिन्हें हम निम्न रूपों में देख सकते हैंः–

(क) दहेज की समस्या।
(ख) परित्यक्ता नारी की समस्या।
(ग) अंतरजातीय विवाह की समस्या।
(घ) अनमेल विवाह की समस्या।
(ङ) बाँझ नारी की समस्या।
(च) कलंकित नारी की समस्या आदि।

2. पारिवारिक समस्याएँः परिवार एक ऐसी मूलभूत सामाजिक संस्था है जो व्यक्ति एवं समाज को जोड़कर रखने का काम करती है अर्थात् परिवार व्यक्ति एवं समाज के बीच की सीढ़ी है और इसी परिवार को सही रूप से चलाने में नारी प्रमुख भूमिका अदा करती है। स्त्री अपने विविध रूपों के माध्यम से कर्तव्य पथ पर चलकर परिवार और समाज में अपना अस्तित्व निर्माण करती है। इस विषय में महाश्रमणी कनक प्रभा का मन्तव्य उल्लेखनीय है रूदृ "परिवार के उस घटक का नाम महिला है, जो परिवार की रीढ़ होने पर भी कुछ नहीं होती परिवार तंत्र के संचालन में उनकी अहम भूमिका होती है, किन्तु, उसका स्वयं का अस्तित्व विवादस्पद रहता है। वह अपने लिए कभी नहीं जीती, फिर भी उसकी सांसो पर पहरे लगे रहते हैं। वह सबके सुख–दुःख में भागीदार बनती है। पर उसका दुःख उसे अकेले ही भोगना पड़ता है। वह सबकी मानसिकता को समझकर अपना कार्यक्रम निश्चित करती है। किन्तु, उसके मन को समझने की चिंता किसी को नहीं है। उसके जीवन की सार्थकता पुरुष की अधीनता स्वीकार करने में ही मानी जाती है। वह कितनी ही सक्षम और समझदार क्यों न हो, एक औरत होने के कारण ही वह सबकी उपेक्षा का शिकार होती है। पति को परमेश्वर मानता और उसके द्वारा प्रदत्त शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं को मुकभाव से सहन करना भारतीय नारी को आदर्श माना जाता है।"[4] परन्तु, भारतीय नारी अब अपने अस्तित्व के प्रति सचेत हो गई है। वह अपने स्वातंत्र्य के लिए आगे बढ़ रही है। किन्तु, पुरुष मानसिकता उसके विकास एवं स्वातंत्र्य को सह नहीं पा रहा। जिससे स्त्री–पुरुष सम्बन्धो में दरार पड़ने लगी है जिसमें 'स्त्री' के सामने परिवार एवं पारिवारिक सम्बन्धों में अनेक समस्याएँ उभरकर आने लगी है। जैसे यादव जी के 'कुलटा', 'मंत्रिविद्ध', 'एक इंच मुस्कान' आदि उपन्यासों में बिखरते हुए दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ दिखलाई पड़ती है।

'कुलटा' उपन्यास में मिसेज एवं मेजर तेजपाल नामक दम्पत्ति है। दोनों के स्वभाव में काफी विरोध एवं रूचि भिन्नता होने से उन में हर वक्त मन–मुटाव होता हैं। जैसे– मेजर एवं मिसेज तेजपाल को मैदान से घर लोटते समय पेन्ट–शर्ट पहनी योरोपियन महिलाएँ जाती हुई दिखती है। जिन्हें देखकर मेजर बेशर्म औरतें कहते हैं। तभी मिसेज तेजपाल उनकी बात का विरोध करती हुई कहती हैः– "इसमें बेशर्मी की क्या बात है। ये तो अपने–अपने कपड़े है। ऐसी खुली रहती है। तभी तो ऐसी स्वस्थ है।"[5] वह इतना ही कह कर रूकती नहीं, दूसरे दिन पिकनिक जाते समय खुद पेन्ट–शर्ट पहनकर निकलने लगती है।

'एक इंच मुस्कान' उपन्यास की रंजना शंकालु स्वभाव की स्त्री है। उसका पति अमर लेखक है लेकिन बहुत सारे कारणों से रंजना के दाम्पत्य जीवन में बिखराव दिखता है। इन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री के असुन्दरता की समस्या को दिखाया है। 'अनदेखे अनजान पुल' की नायिका निन्नी की कुरूपता को कुछ इस प्रकार वर्णन किया हैः–

"और सबके ऊपर था यह तीव्र बोध कि उसका रंग काला है वह सुंदर नहीं है, उसके होंठ साँवले और मसूड़े जरुरत से ज्यादा लाल है और चहेरे पर दाँतों और आँखों के कोयों की सफेदी डरावनी लगती हैं।"[6] अपनी यह कुरूपता उसके लिए समस्या बन जाती है।

यादव जी के उपन्यासों में बाल विवाह भी दिखलाई पड़ती है– 'सारा आकाश' उपन्यास में बाल विवाह समस्या का शिकार बनी है नारी–शिरीष भाई की छोटी बहन। शिरीष भाई अपनी गलती मानते हुए कहते हैं कि– "गलती हमारे घर वालों की ही थी। उसकी शादी कर दी छोटी सी उम्र में। मुश्किल से तब वह होगी ग्यारह– बारह साल की।"[7] शादी के समय पतिदेव पढ़ाई कर रहे थे परन्तु, जब उनकी पढ़ाई हुई तो उन्होंने शिरीष की बहन को अशिक्षित, अनपढ़ कहकर छोड़ दिया। पति के छोड़ देने से वह मानसिक परेशानियों अपने भविष्य की चिंता को लेकर नाराज रहती है। उसके मानसिक द्वन्द्व का उद्वेग इतना बढ़ जाता है कि उसे हिस्टिरिया के दौरे आने लगते है।

3. आर्थिक समस्याएँः नारी के व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की नीव उसके आर्थिक निर्भरता पर ही है। जब तक स्त्री आर्थिक रूप से स्वावलंबी नहीं होती तब तक उसे घर–परिवार, समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता हैं। आज के समाज की वास्तविकता यह है कि जो स्त्री आर्थिक दृष्टि से दूसरों पर आश्रित है, उसका कोई महत्व नहीं है। इस विषय में प्रकाश चन्द्र गुप्त का मानना है किः– "स्त्री भी आर्थिक श्रृंखलाओं में जकड़ी हुई है और आज का पुरुष प्रधान परिवार नारी को क्रीत दासी से अधिक ऊँचा पद नहीं देता। इस वास्तविकता को चाहे जिस रंगीन रेशमी शब्द जाल से छिपाया क्यों न जाए।"[8] वस्तुतः सत्य तो यह है कि आर्थिक स्वाबलंबन नारी को मुक्ति का सबसे बड़ा आधार है।

4. सामाजिक समस्याएँ: नारी विषयक समाज का दृष्टिकोण–नारी की सामाजिक समस्याएँ देखने से पहले, उसके प्रति समाज का दृष्टिकोण देखना आवश्यक है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज से हटकर मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता। समाज स्त्री पुरुष के सहयोग से बना है। भारतीय समाज के केन्द्र में पुरुष है और स्त्री उसकी सहयोगी।

भारतीय समाज में पुरुष प्रधान संस्कृति का प्राबल्य प्राचीन काल से आज तक चला आ रहा है। जिसमें पुरुषों ने कुटनीति से अपने लिए अलग एवं स्त्री के लिए अलग नियम बनाकर उसे कैद कर रखा है। इस विषय में तसलीमा नसरिन का कहना है कि "पुरुषों के लिए 'अधिकार' की व्यवस्था की गयी। पुरुष को अपनी बात कहने, वोट देने, वोट में खड़े होने, सोचने दृ समझने, आजादी पाने का अधिकार घोषित किया गया। नारी के लिए 'दायित्व' की व्यवस्था की गयी। घर–संसार संभालने वगैरह का लालन–पालन करने का दायित्व। एक सदी दो सदी कई दृ कई सदियाँ गुजर गयी। नारी को जिस कुँए में फेंक रखा गया, वह उसी कुँए में पड़ी रही।"[9] आज भी स्त्री पुरुषों द्वारा थोपे गये नियमों को अपना दायित्व नियति मानकर जी रही है। 'सारा आकाश' उपन्यास की प्रभा भी इसी तरह अपना दायित्व मानकर परिवार वालों का ताना सुन कर रह जाती है।

वर्त्तमान समय में विवाह एक संस्कार के रूप में नहीं बल्कि समस्या के रूप में सामने आ रहा है। राजेन्द्र यादव ने अपने 'सारा आकाश' उपन्यास में दहेज की समस्या को अंकित किया है। इस उपन्यास में दहेज देने से घर की आर्थिक स्थिति के चरमराने एवं कर्जों में रहने की स्थिति का सजीव चित्रण किया है। जब लड़की वाले माँग पूरी नहीं कर पाते तो ससुराल में लड़की को सताया जाता है। समर की बहन मुन्नी के साथ यही होता है। समर के यहाँ की आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर भी उन्होंने–"..... घर की कुछ चीजें बेच–बाचकर कुछ भाई साहब की शादी में मिली चीजें मिलाकर दहेज दिया। उफ़ क्या तंग किया बारातियों ने भी हमारी खातिर यों होनी चाहिए, हमें यह चाहिए। ससुराल से मुन्नी के बड़े ही करुणापूर्ण खत आते। यहाँ आती तो बुरी तरह बिलख–बिलख कर रोती। सास और पति मिलकर जो–जो अत्याचार करते उन्हें किसी से कह भी तो नहीं सकती थी।"[10] एक दिन उनके अत्याचार न सह पाने पर मायके भाग आती है। इस प्रकार राजेन्द्र यादव ने 'सारा आकाश' उपन्यास में दहेज की समस्या को उजागर किया है।

भारतीय समाज में परित्यक्ता नारी की समस्या एक कटु समस्या है। यह समस्या समाज में भयंकर रूप में दृष्टीगत होती है। यो तो भारतीय पुरुष प्रधान समाज में नारी का शोषण किया जाता है। राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यास 'सारा आकाश' 'शह और मात', 'एक इंच मुस्कान' आदि उपन्यासों में परित्यात्क्ता स्त्री की समस्या को व्यक्त किया है।

'सारा आकाश' उपन्यास की मुन्नी परित्यक्ता नारी है। उसका पति शराबी व्यक्तिचारी है। मुन्नी के होते हुए भी वह अन्य स्त्री को लाकर रखता है और मुन्नी को प्रताड़ित करता है, मारता–पिटता है। वह अपनी जान बचाने के लिए एक दिन मायके भाग आती है। बाद में लौट जाने का नाम नहीं लेती। जिससे मुन्नी अपने आप को घर वालों पर बोझ मानने लगती है वह गुमसुम रहने लगती है। यादव जी के शब्दों में:–"अधिक से अधिक चुप और तटस्थ रहना उसका स्वभाव हो गया है। सब नीचे होंगे तो वह ऊपर अकेली बैठी–बैठी एक टक ताका करेगी। ऊपर से आई तो सिकुड़ी–सिकुड़ाई सी सबकी निगाहों से बचती रहेगी। जाने क्या उलटा–सीधा सोचा करती है, भीतर जैसे उसे कोई चीज पीस डाल रही हैं। वह दिन–दिन पीली पड़ती चली जा रही है।"[11] अम्मा–बाबूजी भी मुन्नी को लेकर परेशान है। वे न ही उसका दूसरा विवाह कर सकते हैं और न ही उसे पति के घर भेज पाते। वे हालातों के सामने मजबूर है जबकि मुन्नी ससुराल वालों के अत्याचारों की शिकार है।

'सारा आकाश' उपन्यास में दूसरी परित्यक्ता नारी है, शिरीष भाई की बहन तथा 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में अमला के माध्यम से परित्यक्त स्त्री की समस्या को उजागर किया है।

निष्कर्ष रूदृ परन्तु, वर्त्तमान युग में नारी ने अपने आपको युग दृ की माँग के अनुसार ढाँलकर अपने में परिवर्त्तन लाया। अपने विकास की और अग्रेसर होती रही। आज वह धीरे दृ धीरे उन सभी स्थानों क्षेत्रों में दिखाई देती है। जहाँ पहले केवल पुरुष ही कार्यरत थे। नारी ने जी दृ तोड़ संघर्ष करके आज वह उन जगहों शिखारों पर पहुँची हुई दिखती है, परन्तु उसमें पूर्ण रूप से बदलाव नहीं आया।

वस्तुतरू वह आज भी परम्परागत, रूढ़ियों, संस्कारों को लेकर संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। इस बारे में ज्ञानेंद्र रावत का कहना है– "भारतीय समाज में नारी की स्थिति बहुत ही सोचनीय है उसका स्वरूप भयावह है। इसके लिए यदि कोई दोषी है तो वह है भारतीय समाज की सरंचना और स्वरूप।"[12] जब तक भारतीय समाज व्यवस्था बदलती नहीं तब तक 'स्त्री' को संघर्ष करना होगा। समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

अंततरू हम यह कह सकते हैं कि राजेन्द्र यादव ने समाज के सभी वर्गो, उच्चवर्ग, मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग की स्त्रियों का यर्थाथ रूप में चित्रण करके अपनी पैनी दृष्टि का परिचय दिया है जो हिन्दी साहित्य की अमुल्य निधि है। उन्होंने स्त्रियों की उनेक समस्याओं को उजागर करके पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था की पोल खोलने का जबरदस्त प्रयास किया है जो अपने आप में गर्व की बात है। उन्होंने केवल स्त्रियों की समस्याओं को अभिव्यक्ति ही नही दी बल्कि समस्याओं का समाधान भी दिया है जिससे उनका उपन्यास साहित्य पाठकों का पथ प्रदर्शन करता है।

संदर्भ सूची

1. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ, शीला रजवार पृष्ठ 19
2. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली–खण्ड दो, पृष्ठ 100 (नारी कविता में)
3. औरत अस्मिता और यथार्थ, संपा ज्ञानेन्द्र रावत, पृष्ठ 44 वही
4. राजेन्द्र यादव, मंत्रविद्ध और कुलटा, पृष्ठ 148 प्रकाशक, राधाकृष्ण।
5. राजेन्द्र यादव, अनदेखी अनजान पुल, पृष्ठ 17–18, प्रकाशक, राधाकृष्ण।
6. राजेन्द्र यादव, सारा आकाश, पृष्ठ 35 प्रकाशक, राधाकृष्ण।
7. राजेन्द्र यादव, एक इंच मुस्कान, पृष्ठ 154 प्रकाशक, राधा कृष्ण।
8. राजेन्द्र यादव, मंत्रविद्ध और कुलटा, पृष्ठ 51 प्रकाशक, राधाकृष्ण।
9. राजेन्द्र यादव, सारा आकाश, पृष्ठ 35 प्रकाशक, राधाकृष्ण।
10. वही, पृष्ठ 35
11. औरत का कोई देश नहीं, तसलीया नसरीन पृष्ठ 12